केंद्रीय विद्यालय चेरो-सलेमपुर

KENDRIYA VIDYALAYA CHERO-SALEMPUR

विद्यालय ई-पत्रिका(2021-22)

VIDYALAYA E- MAGAZINE (2021-22)

विद्यालय ई-पत्रिका

मुख्य संरक्षक

डि० मणिवण्णन

उपायुक्त,के०वि०सं०वाराणसी संभाग

सह-संरक्षक

बी दयाल

सहायक उपायुक्त,के०वि०सं०

वाराणसी संभाग

संरक्षक

डॉ. अशोक कुमार पाठक

प्राचार्य

संदेश

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हो रहा है कि केंद्रीय विद्यालय चेरो-सलेमपुर ने अपने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सृजनशीलता एवं अभिव्यक्ति को अवसर देते हुए ई-पत्रिका वर्ष पत्रिका 2021-2022 का संस्करण प्रकाशित कर रहा हैं |

विद्यालय पत्रिका बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देती है । पत्रिका में रचना देखकर विद्यार्थियों को आनंद का अनुभव जरूर होगा ,साथ ही भविष्य में सृजनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरणा मिलेगी |

छात्रों कि रचनाओ को सवारकर प्रकाशित करने व उनके अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन मिलता है |

मुझे विश्वास है कि पाठको को पत्रिका में मोलिक एवं रोचक सामग्री अवश्य मिलेगी |

इस अवसर पर मैं विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अपनी और से हार्दिक एवं शुभकामनाए प्रदान करता हूँ |

प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय चेरो-सलेमपुर

आशा की नई किरण

है आवाज अपने मन की
हम करके दिखलायेंगे।
निरंतर प्रयास करके
हम अपने लक्ष्य को पाएँगे ॥

ना डर अपनी असफलता से
तू निरंतर प्रयास करता जा।
धीरे धीरे खुद से युद्ध करके
तू सबको चित्त करता जा॥

यूं ना हों निराश कभी,
ना हार कभी अपने मन से।
अगर हार गया जो तू खुद से
तू जग से हार जायेगा॥

रख मन में विश्वास अभी
तुझे कोई ना हरा पाएगा।
यूं ना हों निराश कभी
तू एक दिन लक्ष्य को पायेगा॥

लें शपथ हम अपने मन में
हम करके दिखलाएंगे।
सतत परिश्रम करके हम
अब अपने लक्ष्य को पायेंगे।

प्रिंस गुप्ता
कक्षा 12-A

LIFE

LIFE IS A TYPE OF FILE, CONTAINING THE RECORDS OF OUR PERSONALITY AND LIVING STYLE.

ITS SOMETIMES LIKE A PATIENT'S CASE, EITHER CURABLE OR HOPELESS.

MOMENTS ARE CHEERFUL, MOMENTS ARE SAD, THAT MAKES OUR LIFE GOOD OR BAD.

LIFE IS NEVER PLAIN AS A BANGLE, IT HAS UPS AND DOWNS, AT EACH AND EVERY ANGLE.

BE ALWAYS HONEST, BE ALWAYS RIGHT, BECAUSE IT WILL PROVIDE THE STRENGTH TO FIGHT.

AND MAKES YOUR LIFE HAPPY, CONTENDED AND BRIGHT.

STRUGGLE WELL AND STUDY HARD,

OTHERWISE THIS SOCIETY WILL CRUSH YOU AND DISCARD.

BE PRE-EMINENT BUT NEVER ARROGANT

AND MAKING YOUR LIFE HEAVEN OR HELL,

REFERS TO YOU, EITHER YOU WANT TO LIVE IN AGONY OR DIE WELL.

ARADHYA

CLASS-XI -B

बेटी

सुन्दर सुशील होती है बेटी

माँ बाप के दुःख हरती है बेटी |

सुबह से शाम आँगन में खुशियाँ लाए बेटी

कौन कहता है बेटी पराया धन है |

क्या आज बेटी -बेटों से कम है

एक माँ बाप की खातिर जी जान लगाकर|

छोटे से काम से मेहनत का पसीना बहाकर

बड़े से बड़े मुकाम तक पहुंचती है बेटी |

शाम्भवी सिंह

कक्षा – IX (B)

माँ

घुटनों से रेंगते -रेंगते

कब पैरों पर खड़ी हुई।

माँ तेरी ममता की छाव में,

ना जाने कब मैं बड़ी हुई।

काला- टीका दूध मलाई

आज भी सब कुछ वैसा है,

तू ही तू है हर जगह

प्यार ये तेरा कैसा है।

सीधी-साधी, भोली भाली

तू ही सबसे अच्छी है।

कितना भी हो जाऊं बड़ी

माँ "मैं" आज भी तेरी बच्ची हूँ ।

कृतिका सिंह

कक्षा – 7 (A)

केंद्रीय विद्यालय स्कूल में

आओ बच्चों तुम्हें पढ़ायें के. वि . स्कूल में

हीरे मोती पैदा करता यह विद्यालय धूल में।

छात्र वृन्द तारों से चमके,शिक्षा के आकाश में

शिक्षा श्रेष्ठ यहाँ होती हैं ,चेरो के इतिहास में।

बढ़ जाते हैं छात्र यहाँ के , फूल समझकर शूल में

हीरे मोती पैदा करता यह विद्यालय धूल में।

सभी छात्र मिल रक्षा करते , विद्यालय के शान की

कण-कण में व्यापक वाणी, सामवेद के गान की।

छात्र यहाँ के कोमल अंकुर , से पौधे बन जाते हैं

शौर्य अनोखा आ जाता है , इस उपवन के फूल में।

आओ बच्चों तुम्हें पढ़ायें के. वि. स्कूल में

हीरे मोती पैदा करता यह विद्यालय धूल में।

शौर्य प्रताप सिंह

कक्षा – VII (B)

बाँट दिया

बाँट दिया इस धरती को
क्या चाँद सितारों का होगा |
नदियों के कुछ नाम रखें
बहती धारों का क्या होगा |

शिव की गंगा भी पानी है ,
आब ए जमजम भी पानी है|
मुल्ला भी पिए पंडित भी पिए
पानी का मजहब क्या होगा|

इन फिरक परस्तों से पूछो
क्या सूरज अलग बनाओगे|
एक हवा में साँस है सबकी
क्या हवा भी नहीं चलाओगे|

नस्लों का करे जो बँटवारा
रहबर वो कौम का ढ़ोंगी है|
क्या खुदा ने मंदिर तोडा था
या राम ने मस्जिद तोड़ी है|

गीतांजली यादव
कक्षा - IX (B)

इस धरा को हमें बचाना है

हरियाली,सागर से लदी हुई हों
फिर इतनी क्यों दुखि होती हों
देखो सारे ग्रह है हँसते
ऐ पृथ्वी! क्यों रोती हों |

यह श्यामल अम्बर, मीठे झरने
तुम्हें किसकी कमी है ,
यह ग्रह तो है जीवन रहित
फिर तेरे आँखों में क्यों नमी है |

मेरे जीवनदान के बदले
तूने मुझे है मार दिया
दुःख में डूबी वसुधा ने
ऐसा ही कुछ जवाब दिया |

यह ग्रह यह तारे गाते है रहते
क्योंकि इनमे इनका रूप है
नीले रंग को काला किया है
तुमने किया मुझे कुरूप है |

जन मानस को जन्में जो
केवल मुझमें ही वो क्षमता थी
खुद की फिकर न की थी मैंने
क्योंकि तुझसे मेरी ममता थी |
हे मानव! अपनी पीड़ा को ,मैंने है खुद में समां लिया
मेरी ममता का वैभव तो देखो ,जा मैंने तुझे क्षमा किया |

पर मानव से मानवता की

मेरी आस अब भीं बाकी है ,

मुझ पर तो सब हंस लिए

उनका प्रयास अब भी बाकी है |

हर क्षण तुम प्रयास करो

इस धरा को मुझे बचाना है

माँ ने तो है ममता दिखलाई

कर्ज मुझे अब चुकाना है |

आदर्श ओझा

कक्षा-X(A)

सुविचार

सब्र एक ऐसी सवारी है जो कभी किसी को झुकने नही देता

ना किसी के नज़रों में ना किसी के क़दमों में |

कोई कितना भी कड़वा बोले अपने आप को शांत रखें

क्योंकि धूप कितनी भी तेज क्यों न हों समुद्र को नहीं सुखा सकती |

आरुषी कुशवाहा

कक्षा-VIII(B)

THOUGHT/विचार

DREAMS NEVER TELL THE FUTURE AN THE PAST NEVER COMES BACK.

सपने कभी भविष्य नहीं बताते

और बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता |

अंकिता शाह

कक्षा-VI(A)

THOUGHT

- **A good name is fruit of life.**
- **Where there is forgiveness, there is good himself.**
- **A satisfied life is better than a successful life because our success Is measured of by others but our satisfactions measured by our own soul, mind and heart.**
- **The purpose of our live is to be happy.**
- **What we learn becomes a part of who we are.**

NAME – ANUSHKA YADAV
CLASS – 6 A

बाप और बेटी का रिस्ता

बेटी की विदाई के वक्त बाप ही सबसे आखिरी में रोता है, समझिए, चलिए आज आप विस्तारित रूप से | बाकी सब भयूक्ता में रोते है, पर बाप उस बेटी के बचपन से विदाई तक के बीते हुए पलो को याद कर करके रोता है | माँ-बेटी के रिश्ते पर तो बात होती ही है, पर बाप और बेटी का रिश्ता भी समुन्द्र से गहरा है | हर बाप घर के बेटे को गाली देता है धमकाता और मारता है, पर वही बाप अपनी बेटी की हर गलती को नकली दादागिरी दिखाते हुए, नजर अंदाज कर देता है | दुनिया उस बाप का सब कुछ लुट ले तो भी, वो हार नहीं मानता, पर अपनी बेटी के आख़ के आशू देख कर खुद अंदर से बिखर जाए उसे बाप कहते है | और बेटी भी जब घर में रहती है | तो उसे हर बात में बाप का घमंड होता है | किसी ने कुछ नहीं कि वो बेटी तपाक से बोलती है “पापा को आने दे फिर बताती हू” | बेटी की जब शादी में विदाई होती है तब वो सबसे मिलकर रोती है, पर जैसे ही विदाई के वक़्त कुर्सी समेटते बाप देखती है, जाकर झूम जाती है, और लिपट जाती है, ऐसे कसके पकड़ती है अपने बाप को जैसे माँ आपने बेटे को | क्योकि उस बच्ची को पता है, ये बाप ही है जिसके दम पर मैंने अपने हर जिद पूरी की थी | खैर बाप खुद रोता भी है | और बेटी की पीठ ठोक कर फिर हिम्मत देता है | आगे लिखने की हिम्मत नहीं है, बस इतना ही कहना चाहती हू |बाप बेटी का प्रेम समुन्द्र से भी गहरा है |

शिवांगगानी यादव
कक्षा -6अ

सुविचार

“नादान”

इंसान दौलत के लिए दिल का सुकून लुटा देता हैऔर

“अकलमंद”इंसान दिल के सुकून के लिए दौलत लुटाताहै

“लक्ष्य”

कोई लक्ष्य इंसान के संघर्ष से बड़ा नहीं |

हारा वाही जो लड़ा नहीं

“मेहनत”

मेहनत इतनी ख़ामोशी से करो

की सफलता शोर मचा दे

“सपना”

जब सब सो रहे होंगे, तब भीं तुझे जग कर पढना ही होगा,

बड़ा सपना तुमने देखा है उसे पूरा करने की लिए दिन रात खुद से लड़ना ही होगा
।

“पढो”

सुबह पढो या रात को हमेशा दिल में रखो इस बात को,

सफल बनाना है एक दिन अपने आप को|

शिवानी यादव

कक्षा-IX(A)

वे पुराने दिन

जेहन पर जोर देने से भी याद आता नहीं है कि हम क्या देखते थे.

सिर्फ इतना पता हैं कि हम जब भी अपने मकतब को देखते दूसरों से जुदा ही देखते थे |

सारा दिन रेत के ख्वाब पिरोते बीत जाता याद है वो पल जब लेट आने पे मैदानका चक्कर लगाना |

वो प्रार्थना के समय क्लास में ही रुक जाना |

रोज हमारा मकतब हमे कुछ अलग सिखाता लेकिन हम कुछ लाते, कुछ भूल आते|

घुटन सी होने लगी थी जिसको छोड़ आते हुए बहुत दिन लग गए खुद को मानते हुए |

दोस्त, किसको पता है की वो वक्त किस तरह से पेश आया |

हम इक्कठे थे, हँसते थे, रोते थे | एक दुसरे को धैर्य व दिलासा दिलाते थे |

वे पुराने दिन कितने अच्छे थे ||

शिवेंद्र कुमार
कक्षा-12TH (A)